कठपुतली का करतब

हम में से शायद ही कोई ऐसा हो जिसने कठपुतली का तमाशा न देखा हो। गा बजा कर, नाचकर, मज़ेदार बातों से कठपुतलियां हमारा मनोरंजन करती हैं। लोगों का ध्यान खींचने के लिए, खेल में रुचि बनाए रखने के लिए, बात को रुचिकर ढंग से प्रस्तुत करने के लिए कठपुतली संचार का एक ताकतवर माध्यम है।

कोई संजीदा बात कहनी हो उसके लिए कठपुतली का प्रयोग ठीक नहीं रहेगा। लेकिन सफ़ाई, स्वास्थ्य संबंधी संदेश देना हो, किसी की गलती बतानी हो, किसी का मज़ाक उड़ाना हो, कोई संदेश दोहराना हो तो कठपुतली का प्रयोग किया जा सकता है। किसी शिक्षाप्रद या अहम् संदेश देने वाली कहानी को सामने रखने के लिए कठपुतली अच्छा माध्यम है। कठपुतली के तमाशे में ढोलक, संगीत, शोरगुल की खास जगह होती है। इनके बिना कठपुतली का तमाशा अधूरा है और मज़ा भी कम हो जाता है।

तरह-तरह की कठपुतलियां

लिफाफ़े की कठपुतली

— एक बड़ा मज़बूत लिफाफा लें।

— लिफाफे पर अपनी कहानी के किसी पात्र का चित्र बनाएं। ध्यान रहे कि लिफाफे का खुला भाग नीचे की तरफ रहे। खुले हिस्से का कुछ भाग गोंद लगाकर चिपका दें ताकि हाथ न फिसले।

— खुले भाग से हाथ लिफाफे के अंदर डालकर कठपुतली नचाएं।

डंडी कठपुतली

— कहानी के किसी भी पात्र का चित्र मोटे कागज पर बनाकर काट लें।

— इसके पीछे एक लंबी डंडी लगा दें।

— लकड़ी के नीचे का सिरा पकड़ कर कठपुतली को हिलाएं।

— हाथ और डंडे के निचले भाग को परदे के पीछे रखें।

दस्ताना कठपुतली

दस्ताना कठपुतली के हाथ, सिर व शरीर में लचक होती है। यह अन्य कठपुतलियों से ज्यादा घुमाई, नचाई जा सकती हैं। यह सबसे ज़्यादा आकर्षक होती हैं।

— एक पुराना मोज़ा लें और उसको एड़ी के हिस्से से काटकर दो टुकड़े कर लें।

— पंजे के हिस्से में रुई ठूंसकर भर दें। यह कठपुतली का सिर बन गया।

— 10×10 सें.मी. मोटा कागज़ काट कर उंगली पर लपेटें। पुतली की गर्दन के लिए एक नली बना दें। इसे सिर के निचले हिस्से में गोंद लगाकर पक्का करें। ध्यान रहे कि नली का कुछ हिस्सा सिर के बाहर रहे।

— सिर के ऊपरी भाग पर ऊन के बाल लगा दें और बाकी भाग पर रंगों से आंख, कान, नाक, मुंह आदि बना दें।

— अपनी कलाई की लंबाई का एक ढीला झोला सी लें जिसे कठपुतली की गर्दन पर बांधें और सजाएं। बस, कठपुतली का दस्ताना तैयार हो गया। कठपुतली का सिर बनाने के लिए गेंद, मिट्टी और पेपरमेशी का प्रयोग भी किया जा सकता है।

— हाथ की पहली उंगली गर्दन में डालें और अंगूठा तथा दूसरी उंगली को दोनों हाथों के लिए इस्तेमाल करें। अंगूठे और उंगलियां हिलाने से कठपुतली हिलेगी। झोले से कलाई ढक जाएगी। चारपाई के पीछे बैठकर भी कठपुतली का खेल दिखाया जा सकता है।

खेल की तैयारी

— इसके लिए एक नाटकीय कहानी अच्छी रहती है जिसमें संदेश के अलावा उछल-कूद, रोमांच, गाना-बजाना हो। भाषा बिल्कुल बोलचाल की होनी चाहिए। गाने सीधे-सादे तुकबंदी के हो सकते हैं। नाटक में पात्र जितने कम होंगे खेल दिखाने में आसानी होगी। पात्र के हिसाब से कठपुतलियां तैयार कर लें।

तमाशे के लिए विशेष मंच चाहिए होता है। कठपुतली चलाने वाले को छिपने की ज़रूरत है। यदि खास मंच न हो तो चारपाई खड़ी करके, उस पर चादर डालकर मंच तैयार किया जा सकता है। ढोलक मजीरे बजाने वाले और गाने वाले मंच के सामने बाईं ओर बैठ जाएं। मंच पर असली दृश्य दिखाने के लिए घर, कमरा, चौका-चूल्हा, मेजकुर्सी, अलमारी आदि की जरूरत हो सकती है। इनका खाका बनाकर चार्ट तैयार किया जा सकता है।

नाटक और मंच तैयार कर जगह चुनें। लोगों को स्थान और समय की सूचना पहले से देनी होगी। जब सभी इक्टठा हो जाएं तो खेल शुरू करें। पहले थोड़ा गाना बजाना भी हो सकता है।

खेल में ज़रूरी बातों को दोहराया जा सकता है मगर आकर्षक ढंग से। पात्र को साफ और ऊंचा बोलना चाहिए। खेल के दौरान पात्र देखने वालों से सवाल पूछें तो अच्छा लगता है। दर्शक अपने को खेल का भाग समझने लगते हैं। खेल की सफलता के लिए यह अच्छा है। खेल में एक सूत्रधार हो जो मनोरंजन के साथ-साथ संदेश और दर्शकों से संबंध बना सकता है। खेल इतना लंबा न हो कि लोग ऊब जाएं। बार-बार पर्दा उठाना गिराना उबाऊ होता है।

अंत में, खेल के बाद दर्शकों के साथ बातचीत ज़रूरी है। उससे पता चलेगा कि आप उन तक अपनी बात पहुंचा सके हैं या नहीं। इस तरह आगे धीरे-धीरे खेल में सुझावों के अनुसार सुधार भी किए जा सकते हैं। खेल की चर्चा में दर्शकगणों की भी रुचि रहती है। □

साभार—संचार के माध्यम, यूनिसेफ़ प्रकाशन